Skill test material, UG Admission-2022-23, Dept. of Acting, FFTV, PLC SUPVA, Rohtak

For Male candidate

Speech-1

संजय– भटक गया हूँ
मैं जाने किस कंटक–वन में
पता नहीं कितनी दूर हस्तिनापुर हैं,
कैसे पहुँचूँगा मैं?
जाकर कहूँगा क्या
इस लज्जाजनक पराजय के बाद भी
क्यों जीवित बचा हूँ मैं?
कैसे कहूँ मैं
कमी नहीं शब्दों की आज भी
मैंने ही उनको बताया है
युद्ध में घटा जो–जो,
लेकिन आज अन्तिम पराजय के अनुभव ने
जैसे प्रकृति ही बदल दी है सत्य की
आज कैसे वही शब्द
वाहक बनेंगे इस नूतन–अनुभूति के ?
(सहसा जाग कर वह योद्धा पुकारता है – संजय)
किसने पुकारा मुझे?
प्रेतों की ध्वनि है यह
या मेरा भ्रम ही है?

नाटक- अंधायुग
नाटककार- धर्मवीर भारती

For Male candidate

Speech-2

मदारी : (बंदर नचाते हुए) हाँ, जरा नाच दिखा दो, नाच। आगरे सहर में नाच दिखा दो। बच्चा लोग, एक हाथ की ताली बजाओ। अच्छा, जरा बताओ तो होली में मिरदंग कैसे बजाओगे? (बंदर मृदंग बजाता है) और पंतग कैसे उड़ाओगे? (बंदर नकल करता है।) और बरसात आ गई तो? (बंदर फिसल पड़ता है।) फिसल पड़ोगे? अरे भई, वाह! और अगर ठंडी लगी तो? (बंदर बदन में कँपकँपी पैदा करता है।) और बुड्ढा हो गया तो? (बंदर लाठी टेककर चलता है।) और मर गया तो? (बंदर लेट जाता है।) हिंदी को राम की कसम और मुसलमान को कुरान की कसम, जरा एक-एक कदम पीछे हट जाओ। अच्छा, अब बताओ, नादिरसाह दिल्ली पर कैसे झपटा था? (बंदर मदारी को एक लाठी मारता है।) अरे, तुम तो सारे दिल्ली शहर को मार डालोगे! बस करो, बड़े मियाँ, बस करो! अच्छा, अहमदसाह अब्दाली दिल्ली पर कैसे झपटा था? (बंदर लाठी मारता है।) हाँय, हाँय, हाँय, तुम तो सारे हिंदुस्तान को रौंद डालोगे। बड़े मियाँ, बस करो! और सूरजमल जाट आगरे शहर पर कैसे झपटा था? (वही नकल) ओहो, आहो, मर गया। बस करो, बड़े मियाँ, बस करो! अच्छा बताओ, फिरंगी हिंदुस्तान में कैसे आया था? (बंदर भीख माँगने की नकल करता है।) और पिलासी की लड़ाई में लाट साहब ने क्या किया था? (बंदर लाठी से बंदूक चलाता है।) और फैर कर दिया था? ओहो-हो, और बंगाल में क्या हुआ था? (बंदर पेट बजाता है और कमजोरी का अभिनय करता है।) अकाल पड़ गया था। (बंदर लेट जाता है।) लोगबाग भूख से मर गया था। और हमारा कैसा हालत है? (बंदर फिर पेट बजाता है।) और कल हमारा कैसा हालत हो जायेगा? (बंदर गिर जाता है)। फिर हमारे को क्या करना चाहिए? (बंदर लोगों के पास जाता है और पैरों पर सर रखकर लेट जाता है।) सलाम करो! (बंदर सलाम करता है। लोग खिसकने लगे हैं।)

नाटक- आगरा बाजार

नाटककार- हबीब तनवीर

For Male candidate

Speech-3

विलोम : कालिदास उज्जयिनी चला जाएगा ! और मल्लिका, जिसका नाम उसके कारण सारे प्रांतर में अपवाद का विषय बना है, पीछे यहाँ पड़ी रहेगी ? क्यों, अंबिका ?

(अंबिका कुछ न कह कर आसन पर बैठ जाती है। विलोम घूम कर उसके सामने आ जाता है।)

क्यों ? तुमने इतने वर्ष सारी पीड़ा क्या इसी दिन के लिए सही है ? दूर से देखनेवाला भी जान सकता है, इन वर्षों में तुम्हारे साथ क्या-क्या बीता है ! समय ने तुम्हारे मन, शरीर और आत्मा की इकाई को तोड़ कर रख दिया है। तुमने तिल-तिल कर के अपने को गलाया है कि मल्लिका को किसी अभाव का अनुभव न हो। और आज, जबकि उसके लिए जीवन भर के अभाव का प्रश्न सामने है, तुम कुछ सोचना नहीं चाहती ?

नाटक - आषाढ़ का एक दिन
नाटककार- मोहन राकेश

For Female candidate

Speech-1

गान्धारी – लेकिन अन्धी नहीं थी मैं।
मैंने यह बाहर का वस्तु–जगत् अच्छी तरह जाना था
धर्म, नीति, मर्यादा, यह सब हैं केवल आडम्बर मात्र,
मैंने यह बार–बार देखा था।
निर्णय के क्षण में विवेक और मर्यादा
व्यर्थ सिद्ध होते आये हैं सदा
हम सब के मन में कहीं एक अन्य गह्वर है।
बर्बर पशु अन्धा पशु वास वहीं करता है,
स्वामी जो हमारे विवेक का,
नैतिकता, मर्यादा, अनासक्ति, कृष्णार्पण
यह सब हैं अन्धी प्रवृत्तियों की पोशाकें
जिनमें कटे कपड़ों की आँखें सिली रहती हैं
मुझको इस झूठे आडम्बर से नफरत थी
इसालिए स्वेच्छा से मैंने इन आँखों पर पट्टी चढ़ा रक्खी थी।

नाटक- अंधायुग
नाटककार- धर्मवीर भारती

For Female candidate

Speech-2

ध्रुवस्वामिनी : भूल है - भ्रम है। **(ठहरकर)** किन्तु उसका कारण भी है। पराधीनता की एक परम्परा-सी उनकी नस-नस में - उनकी चेतना में न जाने किस युग से घुस गई है। उन्हें समझकर भी भूल करनी पड़ती है। क्या वह मेरी भूल न थी - जब मुझे निर्वासित किया गया, तब मैं अपनी आत्म-मर्यादा के लिए कितनी तड़प रही थी और राजाधिराज रामगुप्त के चरणों में रक्षा के लिए गिरी, पर कोई उपाय चला नहीं। पुरुषों की प्रभुता का जाल मुझे अपने निर्दिष्ट पथ पर ले ही आया। मन्दा! दुर्ग की विजय मेरी सफलता है या मेरा दुर्भाग्य, इसे मैं नहीं समझ सकी हूँ। राजा से मैं सामना करना नहीं चाहती। पृथ्वीतल से जैसे एक साकार घृणा निकलकर मुझे अपने पीछे लौट चलने का संकेत कर रही है। क्यों, क्या यह मेरे मन का कलुष है? क्या मैं मानसिक पाप कर रही हूँ?

नाटक- ध्रुवस्वामिनी
नाटककार- जयशंकर प्रसाद

For Female candidate

Speech-3

मल्लिका : तुमने पहले से ही निकाल कर रख दिए ? *अंदर को चल देती है।* तुम्हें पता था मैं भीग जाऊँगी। और मैं जानती थी तुम चिंतित होगी। परंतु माँ... ***(द्वार के पास मुड़ कर अंबिका की ओर देखती है।)***...मुझे भीगने का तनिक खेद नहीं। भीगती नहीं तो आज मैं वंचित रह जाती। ***(द्वार से टेक लगा लेती है।)*** चारों ओर धुआँरे मेघ घिर आए थे। मैं जानती थी वर्षा होगी। फिर भी मैं घाटी की पगडंडी पर नीचे-नीचे उतरती गई। एक बार मेरा अंशुक भी हवा ने उड़ा दिया। फिर बूँदें पड़ने लगीं। ***(अंबिका से आँखें मिल जाती हैं।)*** वस्त्र बदल लूँ, फिर आ कर तुम्हें बताती हूँ। वह बहुत अद्‌भुत अनुभव था माँ, बहुत अद्‌भुत। ***(अंदर चली जाती है। अंबिका उठ कर फटके हुए धान को एक कुंभ में डाल देती है और दूसरे कुंभ से नया धान निकाल लेती है। अंदर के प्रकोष्ठ से मल्लिका के शब्द सुनाई देते रहते हैं। बीच-बीच में उसकी झलक भी दिखाई दे जाती है।)*** नील कमल की तरह कोमल और आद्र्र, वायु की तरह हल्का और स्वप्न की तरह चित्रमय ! मैं चाहती थी उसे अपने में भर लूँ और आँखें मूँद लूँ।...मेरा तो शरीर भी निचुड़ रहा है माँ ! कितना पानी इन वस्त्रों ने पिया है ! ओह ! शीत की चुभन के बाद उष्णता का यह स्पर्श ! ***(गुनगुनाने लगती है।)***

नाटक - आषाढ़ का एक दिन

नाटककार- मोहन राकेश

For Poetry for Male- Female candidate

चंदू, मैंने सपना देखा

चंदू, मैंने सपना देखा, उछल रहे तुम ज्यों हिरनौटा

चंदू, मैंने सपना देखा, अमुआ से हूँ पटना लौटा

चंदू, मैंने सपना देखा, तुम्हें खोजते बद्री बाबू
चंदू,मैंने सपना देखा, खेल-कूद में हो बेकाबू

मैंने सपना देखा देखा, कल परसों ही छूट रहे हो

चंदू, मैंने सपना देखा, खूब पतंगें लूट रहे हो

चंदू, मैंने सपना देखा, लाए हो तुम नया कैलंडर

चंदू, मैंने सपना देखा, तुम हो बाहर मैं हूँ अंदर

चंदू, मैंने सपना देखा, अमुआ से पटना आए हो
चंदू, मैंने सपना देखा, मेरे लिए शहद लाए हो

चंदू मैंने सपना देखा, फैल गया है सुयश तुम्हारा

चंदू मैंने सपना देखा, तुम्हें जानता भारत सारा

चंदू मैंने सपना देखा, तुम तो बहुत बड़े डाक्टर हो

चंदू, मैंने सपना देखा, इम्तिहान में बैठे हो तुम

चंदू, मैंने सपना देखा, पुलिस-यान में बैठे हो तुम

चंदू, मैंने सपना देखा, तुम हो बाहर, मैं हूँ अंदर

चंदू, मैंने सपना देखा, लाए हो तुम नया कैलेंडर

कवि- नागार्जुन

For Poetry for Male- Female candidate

स्त्रियाँ

पढ़ा गया हमको
जैसे पढ़ा जाता है कागज
बच्चों की फटी कॉपियों का

जैसे कि कुफ्त हो उनींदे
देखी जाती है कलाई घड़ी

यों ही उड़ते मन से
जैसे सुने जाते हैं फिल्मी गाने
सस्ते कैसेटों पर

बहुत दूर के रिश्तेदारों के
दुख की तरह!
एक दिन हमने कहा

जैसे पढ़ा होगा बीए के बाद

जैसे कि ठिठुरते हुए देखी जाती है

और समझो जैसे समझी जाती है

एक अदृश्य टहनी से
टिड्डियाँ उड़ीं और रंगीन अफवाहें
चीख़ती हुई चीं-चीं
‘दुश्चरित्र महिलाएँ, दुश्चरित्र
महिलाएँ
किन्हीं सरपरस्तों के दम पर फूली-फैली
अगरधत्त जंगली लताएँ!
खाती-पीती, सुख से ऊबी
और बेकार बेचैन, आवारा महिलाओं का ही

(कनखियाँ, इशारे, फिर कनखी)
बाकी कहानी बस कनखी है।
हे परमपिताओ,
परमपुरुषो
बख्शो, बख्शो, अब हमें बख्शो!
कवि- अनामिका

मेरा पता

आज मैंने
अपने घर का नम्बर मिटाया है
और गली के माथे पर लगा
गली का नाम हटाया है
और हर सड़क की
दिशा का नाम पोंछ दिया है
पर अगर आपको मुझे ज़रूर पाना है
तो हर देश के, हर शहर की,
हर गली का द्वार खटखटाओ
यह एक शाप है, यह एक वर है
और जहाँ भी
आज़ाद रूह की झलक पड़े
समझना वह मेरा घर है।

कवि-अमृता प्रीतम

पुनश्च

मैं इस्तीफा देता हूं
व्यापार से

परिवार से
सरकार से
मैं अस्वीकार करता हूं
रिआयती दरों पर
आसान किश्तों में
अपना भुगतान
मैं सीखना चाहता हूं
फिर से जीना...
बच्चों की तरह बढ़ना
घुटनों के बल चलना
अपने पैरों पर खड़े होना
और अंतिम बार
लड़खड़ा कर गिरने से पहले
मैं कामयाब होना चाहता हूं
फिर एक बार
जीने में

कवि- कुंवर नारायण

Films for Discussion (Group/Individual)

1. **Masaan** by Neeraj Ghaywan, 2015 (India)
2. **The Kid** by Charlice Chaplin, 1921
3. **Joker** by Todd Phillips, 2019 (U.S)
4. **Pushpa: The Rise** by Sukumar, 2021 (India)
5. **Sherni** by Amit V. Masurkar, 2021 (India)
6. **Payaasa** by Gurudutt, 1957 (India)